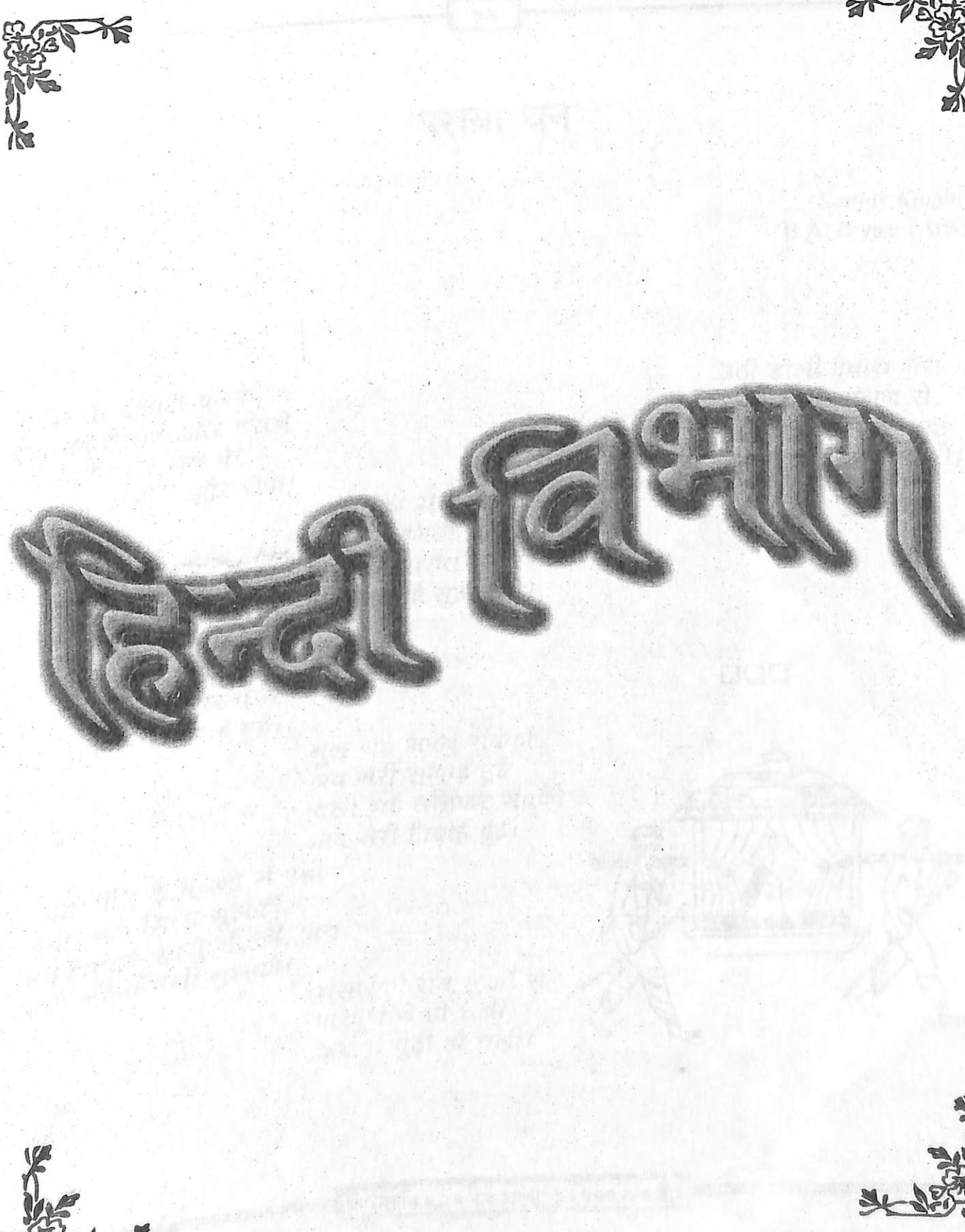

हिन्दी विभाग

पराया धन

Sanjay Kumar
B.A. II year (Arts)

आयी थी दुलारी बनके,
सब को हँसाने और हसने
जाऊँगी पराई बन के,
सब को रूलाके और रोके।

नयनों की सेज पर बैठी
वह मिठी-मिठी सी सपनेस की
तारों की बारात लेकर
आत्मा कोई मुझे लेमे।

सपना सच हो गया
जब मैं सयानी हुई,
बंध गई अटुट रिस्तों में
जब अपनों से पराई हुई।

भुल गई अपने सबकों
जब मेरी सगाई हुई
चली गई छोड़कर सबको
जब मेरी विदाई हुई।

नीति-रीति के बंधनों में पड़ी
नया नाम मिला मुझकों,
बहु कहकर सासुँ माँ जी, अब
क्यों न पुकारेगी मुझकों।

संसारकी सब सुखों से
परिपुर्ण में हो चली,
अब में बुढ़ी हो चली।

उठी डोली दुबारा मेरी
सजना के आंगन से,
हो गई अपनों से जुदा
इस संसार के नातों से।

□□□

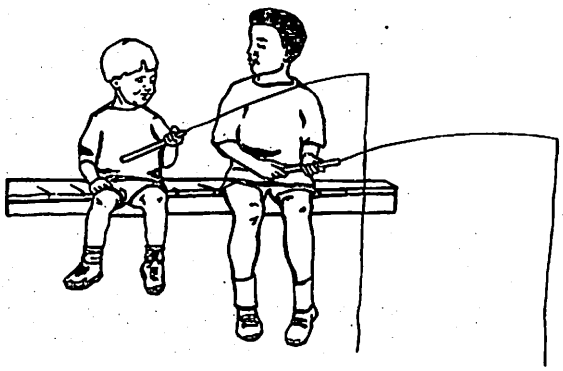

दोस्त मेरे

Sanjay Kumar Rai
B.A. II year (Arts)

दोस्त मेरे-जीवन जीना तो सीख,
गिरने से पहले अपने को बचाना तो सीख।
दुनिया बहुत बुरी है, न जीने और न मरने देगी,
जीने-मरने की डर को, बाहर निकालकर फेंकना तो सिख।

दुनिया वाले हर कदम पर ठोकर मारकर जाएगें
अगर हिम्मत है तो, उनसे पहले कदम बढ़ाना तो सीख।
हर वक्त धोखा देने की आदत है उन्हे,
दोस्त मेरे धोखा न देने की कसम खानी तो सीख।
पैसा-पैसा करके चले जाते है दुनिया से
इस कागज के टुकरे को, एहमियत न देना तो सीख।
जीवन एक पहेली गै, बस दो वक्त की रोटी है,
पर रोटो के चक्कर में, अपने को बुराइयों से बचाना तो सीख।

बहुत मिलेगें हसने वाले, नजर तुम पर रखने वाले।
ऐ मेरे दोस्त इस दुनिया में आसु क्या है यह तो सीख।

ऐ मेरे दोस्त आगे रहना
रह वक्त किसी की मदत करना।
ऐसा न सहि, शरीर से ही
हर किसी की रक्षा करना।
तोरफा खुदा जरुर मिलेगा

अगर तु सच्चाई के पथ पर चलेगा।
चलना नहीं बुराई के राहों में
नहीं तो हर वक्त काटा चुभेगा।
दुनिया में कुछ भी नही है न्यारी
बस तेरी-मेरी दोस्ती है-न्यारी
इसलिए तो कहता हुँ, पहले
इनसानियत क्या है, यह तो सीख।

❑❑❑

क्रिकेट

हुमेश्वरी दास
टी. डी. सी - प्रथम
जीव-विज्ञान विभाग

जिन्दगी क्रिकेट है, धरती एक पिच है,
हर इन्सान बल्लेबाजी है, बालर यमदुत है,
विकट यमराज है, भगवान अम्पायर है,
प्राण वैसे विकट है, जिन्दगी एक क्रिकेट है।
किल्लीयाँ उड़ने का मतलब, प्राण पखेरु उड़ जाना,
और एल. बी. डबल्यू आउट होना, तो दिल दौरा है,
रन आउट होने वालों को, वीरगति मिल जाती है,
कैच आउट होने वालों को, विरगति मिल जाती है,
स्टम्प आउट होनेवालों की हत्या ही हो जाती है,
आत्महत्या कर लेना तो, हिट विकेट है,
जिन्दगी एक क्रिकेट है।
इस पर भी कुछ ऐसे हैं, जो नाट आउट रह जाते हैं,
महापुरुष जैसे मर कर भी, कामेन्टेटर रह जाते हैं।

❑❑❑

गीत
तर्ज-परदेशी जाना नहीं

रतन मिश्रा
एच. एस. द्वितीय बर्ष
विज्ञान विभाग

मैं ये नहीं कहता कि कालेज मत जाना,
पर कॉलेज की लड़की को कभी ना पटाना,
हुँ .... हुँ - हुँ - हुँ ....
कॉलेज की लड़की को कभी पटाना नहीं,
पट जाए तो पिक्चर कभी दिखाना नहीं,
और घर ले जाना और घुमना,
फिर झाड़ी के पीछे बैठ के उसको मनाना,
और 'रतन मिश्रा' की फिर गजलें सुनाना,
कॉलेज की लड़की को कभी पटाना नहीं,
पट जाए तो पिक्चर कभी दिखाना नहीं,
सीटी किसी लड़की की तरफ जो बजाओगे,
ऊँची हिल की सैण्डिल से पिट जाओगे,
आँख मारने का फैशन तो पुराना है,
हलो डार्लिंग कहना नया जमाना है,
लड़की का डैडी मारे तो पिट जना,
लड़की से पहले तुम उसके
बाप को पटाना,
कॉलेज की लड़की को कभी पटाना नहीं,
पट जाए तो पिक्चर कभी दिखाना नहीं।

□□□

तीन बातें

Amarjit Chandra Raut
H. S. 2nd year (Arts)

क) तीन चीजें किसी का इंतजार नही करती

- समय, मौत और ग्राहक।

ख) तीन चीजें जीवन में एकबार मिलती है

- माँ, बाप और जवानी।

ग) इन तीनों का सम्मान करो

- मा, बाप और गुरु।

घ) तीन चीजों से बचने की कोशिश करनी चाहिए

- बुरी संगत, स्वार्थ और निन्दा।

ङ) तीन चीजें परदे योग्य है

- धन, स्त्री और भोजन।

च) तीन चीजें कोई दुसरा नहीं चुरा सकता

- अक्ल, चरित्र और हुनर।

छ) तीन चीजें कभी नहीं भूलनी चाहिए

- कर्ज, फर्ज और मर्ज।

ज) तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है

- ईश्वर, विद्या और परिश्रम।

झ) इन तीन पर सदा दया करो

- बालक, भुखे और पागल।

❑❑❑

हँसते हँसते जीना

Amarjit Chandra Raut
H. S. 2nd year (Arts)

क) एक आदमी शराब पीकर एक नाला के सामने बीस-बीस ...... चिल्ला रहा था, तभी एक आदमी वहाँ से गुजरा। उसने आश्चर्य से उस शराबी से पुछा "भाई-साहब, आप बीस-बीस क्यों चिल्ला रहे है? बीस के बाद तो 21 आता है। तो आइए, में आपको बीस-बीस का रहस्य बताता हुँ। आदमी शराबी की बात सुनकर उसके पास गया। उसके आते ही शाराबी उसे नाला में धकेल दिया। उसके बाद शराबी 21-21 चिल्लाने लगा।

ख) अदालत में बढ़ते हुए शोर को सुनकर
जजबोला : अब कोई जरा भी आवाज करेगा तो उसे बाहर निकाल दिया जायेगा।
हो...... हो....... हा......... हा.......... कटघरे में खड़ा मुजरिम बोला।

ग) कुछ जवान कुत्ते तेजी से दौड़कर कही जा रहे थे। एक बुढ़े कुत्ते ने उनसे पुछा, "तुम सब कहाँ जा रहे ही? कुत्तों ने जबाब दियाः "बगल वाले गाँव में एक नया खम्भा बना है, हम सब उसी का उद्घाटन करने जा रहे है।"

घ) रामुः "माँ, क्या में नदी में तैरने कि लिए जा सकता हुँ।
माँ : "बिल्कुल नहीं, वह बहुत गहरी है।"
रामु : लेकिन पिताजी तो तैर रहे हैं।
माँ : मैं जानती हुँ। लेकिन पिताजी ने तो जीवन बीमा कर रखा हैं।

ङ) लड़का : एक लीटर भैंस का दुध दैना।
दुध वाला : तुम्हारा बर्तन छोटा है।
लड़का : तो बकरी का ही दुघ दे दो।

□□□

शायरों की महफिल

Ratan Mishra
H. S. 2nd year (Sc)

तेरी फुल सी जवानी मुझे तड़पाया करती हैं,
तु मेंरे ख्वाबों में हर रोज आया करती हैं,
दिल को मेरे यूँ बेकरार करके जाया न करो,
तेरे जाने के बाद तेरी याद आया करती है।

बड़ी आशिकी से दिल लगाया जाता है,
बड़ी मुशकिल से वादा निभाया जाता है,
ले जाती हैं मोहब्बत उन राहों पे,
जहाँ दीया नहीं दिल जलाया जाता है।

एहसास बहुत होगा, जब छोड़ के जाएँगे,
रोएँगे बहुत, मगर आँसुं नहीं आएँगे,
जब साथ ना दे कोई, तो आवाज हमें देना,
आसमाँ पे भी होंगे तो लौट के आ जाएँगे।

फुल बनके मुस्कुराना जिन्दगी है,
मुस्कुरा के गम भुलाना जिन्दगी है,
मिल कर खुश हुए तो क्या हुए,
बिना मिले हीं दोस्ती निभाना जिन्दगी है।

दोस्ती करो तो धोखा मत देना,
दोस्तों को आँसु का तोहफा मत देना,
दिलसे रोए कोई, तुम्हे याद करके,
ऐसा किसी को मौका मत देना।

ना प्यार ना मौहब्बत यारों,
देवदास का कहना मानों,
ना चन्द्रमुखी ना पारों,
सिर्फ रोज शाम को दो पैग मारो।

अगर तुने प्यार को ठुकरा दिया
तो कफन से मोहब्बत कर लेंगे हम,
अपनी अर्थी को सजा के फूलो से,
तेरी डोली के पास से गुजर लेंगे हम।

इतनी बेदर्दी से दिल को मेरे वो तोड़ देगी,
ये मालुम न था मुझे अकेला वो छोड़ देगी
ऐमेरे मासुम दिल, तु तन्हाई से प्यार कर ले,
बेवफा भी अब वफा का साथ छोड़ देगी।

महफिल में गाया हमने भी,
पर बेसुरे आवाज के साथ,
ईश्क तो हमने भी की,
पर बेवफा मुमताज के साथ

गा तो मै भी सकता था,
पर मेरी आवाज बेवफा निकली,
ताजमहल तो मै भी बनवा सकता था,
पर मेरी मुमताज बेवफा निकली।

सच्चा तोहफा

Amarjit Chandra Raut
H. S. 2nd year (Arts)

मनीष, अजय, आशीष व अशोक चारों पक्के दोस्त थे। पुरे स्कुल में उनकी दोस्ती प्रसिद्ध थी। अजय, आशीष व अशोक तो धनी घरके लड़के थे। इसके विपरीत मनीष एक गरीब घर का लड़का था। उसके पापा एक कारखाने में काम करते थे परंतु तनख्वाह कम होने के कारण घर का गुजारा चलाना भारी पड़ जाता था। महीने के अखिरी में तो उनके पास फुटी कौड़ी भी नहीं बचती थी। फिर मनीष की पढ़ाई का खर्च कैसे उठाते।

मनीष को उसके दोस्तों ने कभी भी गरीब होने का अहसास नहीं होने दिया था तथा वे उसकी हर तरह से मदद किया करते थे।

मनीष का जन्म दिनआने वाला था दोस्तों के बहुत आग्रह करने पर उसने जन्मदिन मनाने को हाँ करली। वह स्कुल में उर्स्ट डिविजन से पास हुआ था, जो सब उसके दोस्तों का ही परिणाम था। पढाई में वह भी दोस्तों की मदद कर देता।

जन्मदिन का दिन भी आ गया। वह सवेरे नहा धोकर तैयार हुआ बाजार से छोटा केक व नमकिन ले आया। शाम हो गई। मनीष ने कमरे को व्यवस्थित कर केक व नमकीनन की प्लेट टी-टेबुल पर सजा दी और वह साफ घुले कपड़े पहनकर दोस्तो के आने का इंतजार करने लगा। तभी अचानक उसके दोस्तों की आवाज सुनाई दी। वह उनका स्वागत करने के लिए दरवाजे पर आ खड़ा हुआ तभी सभी दोस्तों को कमरे में ले आया, जहाँ पर उसके मम्मी-पापा भी आ गए थे।

"हैप्पी बर्थ डे टु यू ...." के साथ उसने केक काटा व मम्मी-पापा ने केक का एक टुकड़ा मनीष के मुँह में डालदिया। उसके बाद सब दोस्तों ने नाश्ता किया व उपहार देकर विदा ली।

दोस्तों के चले जाने के बाद उसके माता पिता ने उपहार खोलने चालु किए। पहला उपहार खोलते

ही उनकी आँखे दंग रह गई। उसमें मनीष के आने वाले सालभर के कोर्स की किताबें थीं व एक पर्चा लिखा हुआ था - "दोस्त मनीष, तुम्हारे जन्मदिन पर मेरी ओर से तुम्हे यह तोहफा दे रहा हुँ कि तुम हमेशा अपने दिमाग में बैठाए रखोगे। तुम्हारी सफलता पर यह तोहफा और बहुमूल्य हो जाएगा। तुम्हारी सफलता की कामना के साथ तुम्हारा दोस्त-आशीष।

दुसरा तोहफा खोलने पर उसमें 151 रूपये का उपहार था। उसमें भी एक पर्चा लिखा था, "दोस्त जन्मदिन पर मेरी ओर से स्कुल की फीस का उपहार स्वीकार करना। तुम्हारा मित्र अजय।

मम्मी-पाप हैरानी से देखते जा रहे थे। इन नन्हे-नन्हे मित्रों के उपयोगी तोहफा को। तीस तोहफा खोला तो उसमें स्कुल की ड्रैस थी और पर्च में लिखा था- "दोस्त मनीष मेरे ये उपहार जन्मदिन पर स्वीकार करना, तुम्हारा मित्र-अशोक।"

और इस तरह मनीष को हर वर्ष अनमोल तोहफे मिलेते रहे और वह हर वर्ष परीक्षा में अच्छे अंको से पास होता रहा। आज उसे अपने दोस्तों पर गर्व हो हा था क्योंकि वास्तविक उपहार वही हैं, जिससे लेने वाले को उसकी उपयोगिता व आवश्यकता में समन्वय भी रहे ताकि उससे उसका भविष्य सुधरे।

सीख :- हमेशा अच्छे मित्रों की संगतकरनी चाहिए ताकि भविष्य में कभी भी कोई कष्ट न आए।

❑❑❑

Laugh for a while

१) अजित (प्रदीप से) : क्या बात है यार, तुम्हारी बीबी तुमसे नाराज है क्या? वह तुम से उतना आगे-आगे क्यों चल रही है?
प्रदीप : नहीं यार, दरअसल, दुकानदार ने उसे कह दिया है कि यह साड़ी दुर से देखने में ज्यादा अच्छी लगेगी, इसलिए वह मुझ से दुर-दुर चल रही है।

२) इंस्पेक्टर (एक औरत से) : आपके घर चोरी कब हुई?
औरत : जब मै घर में नहीं थी।
इंसपेक्टर : आप कहाँ गई थी?
औरत : मै अपनी पड़ोसन को घर की हिफाजत के तरीके बताने गई थी।

३) सलीम (जावेद से) : यार, इस मोटे फ्रेम वाले चशमे में तो तुम मुझे उल्लु लग रहे हो।
जावेद : अगर मै य चशमा उतार दुँ तो तुम मुझे उल्लु नजर आओगे।

४) पत्नी (पति से) : तुम जब कार मोड़ते हो, तो मुझे बहुत डर लगता है।
पति : डरती क्यों हो, जब कार मुड़े तो तुम भी मेरी तरह आँखे बंद कर लिया करो।

५) शापिंग कर के लोटी पत्नी पर ताना कसते हुए पति ने कहा, "ओह लगता है कि आज सारा बाजार उठा लाई हो। कुछ छोड़ा भी है दुसरों के लिए?"
इस पर बीबी तपाक से बोली, हाँ हाँ क्यों नहीं आप के लिए बिल छोड़ कर आई हुँ।

Result of the Competitions under Culture & Debating Section :

Go as you like :

1st : Runa Layla

Recitation Competition :

Assamese :

1st : Runa Layla

Hindi :

1st : Sutanuva Dutta

English :

1st : Biswajit De

Result of the Bihu Dance Competition

1st : Kaveri Krishna Changmai

Badminton Compition

Boys Doubles :

Winner : Shri Saurav Bora and
Shri Dibojyoti Hatibaruah

Boys Volley Ball Competition :

Winner: 1st India Group
Indu Bhusan Bora
Rahul Gogoi
Kaushik Rajkhowa
Shekhar Saikia
Shantanu Dutta
Bichitra Mohan Gogoi
Sandipon Ghosh
Rupam Dutta

Culture and Debating section

A. ***Sport Essay Writing Competition (Sub : The College You Dream About)***

1st Position : Subhasish Gogoi (HS First Year, Arts)

2nd Position : Aalooran Rahman Bora (B.A. 3rd Year)

3rd Position : Sumi Das Choudhuri (B.Sc. 2nd Year)

B. ***Story Writing Competition***

1st Position : Aalooran Rahman Bora (B.A. 3rd Year) (Forever)

2nd Position : Runa Layla (B.A. 2nd Year) (সবাপাত, সেউজ, জীবন)

3rd Position : Jayshree Phukan (B.Sc. 3rd year) (সময়)

Result of Creatire Dance Competition :

1st : Sanchita Rajkhowa and
Runa Laila

Volley Ball Girls :

Winners Name

1. Miss Geeta Kumari (Captain)
2. Nirmali
3. Dipti Deori (V. Captain)
4. Naina Hazarika
5. Monica Sharma

Badminton Competition (Girls Doubles) :

Winner : Miss Monika Sharma and
Miss Nirmali Boruah

Badminton Competition :

Girls Singles Winner :

Winner : Miss Savana Sultana

Badminton Compition Mixed Doubles :

Winner : Shri Sourav Bora and
Miss Farhana Hazarika

Result of Modern Dance Competition :

1st : Runa Laila And Neil Hazarikia

Bangla :

1st : Sutanuka Dutta
2nd : Runa Layla
3rd: Sabeena Yasmin

ডিব্রুগড় হনুমানবক্স সূৰজমল কানৈ মহাবিদ্যালয়

ছাত্র একতা সভা, ২০০৫-০৬ বর্ষ

ড° শিৱকান্ত দত্ত
সভাপতি

প্রাঞ্জল চেতিয়া
উপ-সভাপতি

জয়ন্ত কুমাৰ দাস
সাধাৰণ সম্পাদক

গীতা কুমাৰী
সহ-সাধাৰণ সম্পাদক

বিশ্বজিৎ চেতিয়া
আলোচনী সম্পাদক

সন্দীপন দুৱাৰা
তর্ক আৰু সাংস্কৃতিক সম্পাদক

অভিনীতা বৰা
সঙ্গীত বিভাগৰ সম্পাদক

ইন্দ্রনীল শইকীয়া
গুৰ খেল বিভাগৰ সম্পাদক

নয়নমণি সোনোৱাল
লঘু খেল বিভাগৰ সম্পাদক

সঞ্জীৱ বুঢ়াগোঁহাই
শৰীৰ চৰ্চা বিভাগৰ সম্পাদক

জয়ন্ত মাধৱ গগৈ
সধাৰণ খেল বিভাগৰ সম্পাদক

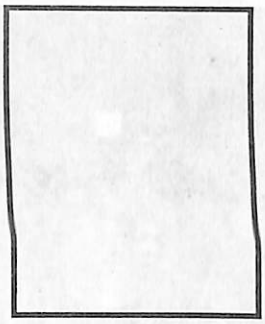

ৰিজাউল হক
ছাত্ৰ জিৰণি কোঠাৰ সম্পাদক

ৰিম্পী গগৈ
ছাত্ৰী জিৰণী কোঠাৰ সম্পাদক

লোহিত ডেকা
সদস্য

ৰূপম শর্মা
সদস্য

সৌৰভ দলে
সদস্য

দীপাঙ্কৰ চুতীয়া
সদস্য

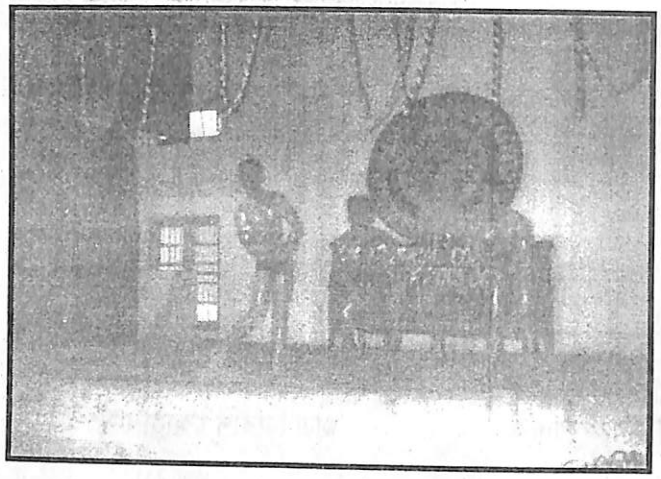

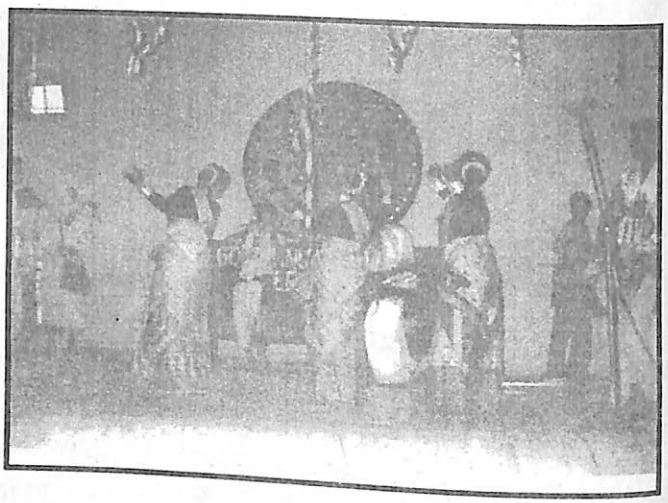

মহাবিদ্যালয়

সংবাদ

ছাত্ৰ একতা সভাৰ সৌজন্যত সমূহীয়াভাৱে আয়োজিত
ড° ভবেন বৰুৱা চাৰৰ অৱসৰৰ প্ৰাকমুহূৰ্তত

'কানেয়ান'ৰ ইতিহাস

প্ৰাক্তন সম্পাদক সকল

১৯৪৬ - ৪৭	ইৰা দত্ত
১৯৪৭ - ৪৮	বিনন্দ্ৰ চন্দ্ৰ বৰুৱা
১৯৪৯ - ৫০	ভূপেন্দ্ৰ বৰ পূজাৰী
১৯৫০ - ৫১	লক্ষী বৰা
১৯৫১ - ৫২	নৰেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী
১৯৫২ - ৫৩	খগেন্দ্ৰ মহন
১৯৫৩ - ৫৪	নিত্যা হাজৰিকা
১৯৫৪ - ৫৫	দূৰ্গা দত্ত ভৰালী
১৯৫৫ - ৫৬	উজ্জ্বল শইকীয়া
১৯৫৬ - ৫৭	যামিনী ফুকন
১৯৫৭ - ৫৮	সুশীল দুৱৰা
১৯৫৮ - ৫৯	কিৰণ শৰ্মা
১৯৫৯ - ৬০	বিশ্ব বৰুৱা
১৯৬০ - ৬১	লুইত দাস
১৯৬১ - ৬২	অনিল কুমাৰ হাজৰিকা
১৯৬২ - ৬৩	লম্বেশ্বৰ বৰুৱা
১৯৬৩ - ৬৪	হেম ওজা
১৯৬৪ - ৬৫	মুকুট সিংহ ফুকন
১৯৬৫ - ৬৬	ৰজনীকান্ত চেতিয়া
১৯৬৬ - ৬৭	কল্পনা দত্ত
১৯৬৭ - ৬৮	তৰুণ গগৈ
১৯৬৮ - ৬৯	ভীমকান্ত বৰগোঁহাই
১৯৬৯ - ৭০	—
১৯৭০ - ৭১	মোহন সোনোৱাল
১৯৭১ - ৭২	হিতেশ বিকাশ গগৈ
১৯৭২ - ৭৩	ডম্বৰু বৰা
১৯৭৩ - ৭৪	লক্ষ্মীপ্ৰিয়া দেৱী
১৯৭৪ - ৭৫	গিৰিন গগৈ
১৯৭৫ - ৭৬	—
১৯৭৬ - ৭৭	সঞ্জীৱ বৰা
১৯৭৭ - ৭৮	কৃপাল কুমাৰ কোঁৱৰ
১৯৭৮ - ৭৯	প্ৰভাত প্ৰাণ কোঁৱৰ
১৯৭৯ - ৮০	ৰূপেশ্বৰ শইকীয়া
১৯৮০ - ৮১	—
১৯৮১ - ৮২	মনোজ কুমাৰ বৰুৱা
১৯৮২ - ৮৩	মিন্টু গগৈ
১৯৮৩ - ৮৪	কল্যাণী বৰুৱা
১৯৮৪ - ৮৫	—
১৯৮৫ - ৮৬	—
১৯৮৬ - ৮৭	কামিনী কুমাৰ গোঁহাই
১৯৮৭ - ৮৮	নৱজ্যোতি শইকীয়া
১৯৮৮ - ৮৯	পানীৰাম ডেকা মৰাণ
১৯৮৯ - ৯০	সুনীল ৰাজকোঁৱৰ
১৯৯০ - ৯১	সুবোধ কুমাৰ সোনোৱাল
১৯৯১ - ৯২	প্ৰভাত কুমাৰ গগৈ
১৯৯২ - ৯৩	মৃণাল কুমাৰ গগৈ
১৯৯৩ - ৯৪	নৱজিৎ দেউৰী
১৯৯৪ - ৯৫	ৰাজীৱ গগৈ
১৯৯৫ - ৯৬	মানস প্ৰতীম শৰ্মা
১৯৯৬ - ৯৭	সুৰুজ কোঁৱৰ
১৯৯৭ - ৯৮	তৰালী গগৈ
১৯৯৮ - ৯৯	কান্তা কাবেৰী সোনোৱাল
১৯৯৯ - ২০০০	সাৰংগ শংকৰ কলিতা
২০০০ - ২০০১	ধ্ৰুৱজ্যোতি ফুকন (অপ্ৰকাশিত)
২০০১ - ২০০২	শ্যামলজ্যোতি গগৈ
২০০২ - ২০০৩	সংগীতা গগৈ (অপ্ৰকাশিত)
২০০৩ - ২০০৪	বব্ এলিচন দাস
২০০৪ - ২০০৫	মানসজ্যোতি হাজৰিকা
২০০৫ - ২০০৬	বিশ্বজিৎ চেতিয়া